कॉपीराइट एवं मुक्त उपयोग अनुमति

पवित्र आत्मा और मानवता
(The Holy Spirit and Humanity)

प्रथम प्रकाशन: 2026

© 2026
Rev. Sarvjeet Herbert
Nayi Srishti – नई सृष्टि

मुक्त वितरण घोषणा **(Open Distribution)**

यह पुस्तक सेवकाई, शिक्षा और आत्मिक विकास के उद्देश्य से तैयार की गई है।

इस पुस्तक को पूरी तरह निःशुल्क और स्वतंत्र रूप से:

- PDF के रूप में डाउनलोड किया जा सकता है
- वेबसाइटों पर साझा किया जा सकता है
- YouTube विवरण (description) में जोड़ा जा सकता है
- WhatsApp, Telegram, Instagram, Facebook आदि पर वितरित किया जा सकता है
- चर्च, कलीसिया, बाइबल अध्ययन और प्रशिक्षण में उपयोग किया जा सकता है

इसके लिए किसी लिखित अनुमति की आवश्यकता नहीं है।

श्रेय **(Attribution)**

जहाँ संभव हो, वहाँ निम्न श्रेय दिया जाए:

लेखक: Rev. Sarvjeet Herbert
प्रकाशक: Nayi Srishti – नई सृष्टि

व्यावसायिक उपयोग

यह पुस्तक व्यावसायिक लाभ के लिए नहीं बनाई गई है।
यदि कोई इसे बेचने या व्यावसायिक उपयोग करना चाहता है, तो पहले लेखक/प्रकाशक से संपर्क करे।

प्रथम संस्करण – 2026

पवित्र आत्मा और मानवता

(The Holy Spirit and Humanity)

एक शिष्यत्व शिक्षण श्रृंखला

नए विश्वासियों और आत्मिक विकास के लिए

Author
Rev. Sarvjeet Herbert
Nayi Srishti – नई सृष्टि

"यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है।"
(2 कुरिन्थियों 5:17)

कॉपीराइट एवं उपयोग अनुमति

© 2026
Rev. Sarvjeet Herbert
Nayi Srishti – नई सृष्टि

यह पुस्तक **मुक्त उपयोग (Open Use)** के लिए उपलब्ध है।

इसे व्यक्तिगत अध्ययन, कलीसियाई शिक्षा, शिष्यत्व और प्रचार के लिए स्वतंत्र रूप से उपयोग किया जा सकता है,

बशर्ते मूल लेखक और स्रोत का उल्लेख किया जाए।

लेखक की भूमिका

प्रिय पाठक,

यह पुस्तक केवल जानकारी देने के लिए नहीं, बल्कि आत्मिक जीवन को दिशा देने के लिए लिखी गई है।

वर्षों से लोगों ने मुझसे आग्रह किया कि मैं पवित्र आत्मा पर लिखूँ—ऐसी भाषा में जिसे नया विश्वासी भी समझ सके।

यह किसी धर्म की शिक्षा नहीं, बल्कि मसीह में नए जीवन की समझ है।

मेरी प्रार्थना है कि पवित्र आत्मा स्वयं आपको सिखाए, मार्गदर्शन दे और आपके जीवन को बदले।

—

Rev. Sarvjeet Herbert

इस पुस्तक का उद्देश्य

इस पुस्तक का उद्देश्य है:

- पवित्र आत्मा की बाइबिलीय समझ देना
- उद्धार और नया जन्म स्पष्ट करना
- आत्मिक फल और अभिषेक के जीवन को सिखाना
- विश्वासियों को सेवकाई और जीवन में मार्गदर्शन देना

यह पुस्तक शिष्यत्व के लिए है।

इस पुस्तक का उपयोग कैसे करें

1. प्रत्येक अध्याय को प्रार्थना के साथ पढ़ें

2. शास्त्रों को ध्यान से समझें

3. जल्दबाज़ी न करें

4. समूह या कलीसिया में चर्चा करें

5. पवित्र आत्मा को कार्य करने दें

विषय सूची

कॉपीराइट एवं मुक्त उपयोग अनुमति 1
पवित्र आत्मा और मानवता
(The Holy Spirit and Humanity) **1**
प्रथम प्रकाशन**: 2026** **1**
© 2026
Rev. Sarvjeet Herbert
Nayi Srishti – नई सृष्टि **1**
मुक्त वितरण घोषणा (Open Distribution) 1
यह पुस्तक सेवकाई, शिक्षा और आत्मिक विकास के उद्देश्य से तैयार की गई है। **1**
इस पुस्तक को पूरी तरह निःशुल्क और स्वतंत्र रूप से**:** **1**
● **PDF** के रूप में डाउनलोड किया जा सकता है **1**
● वेबसाइटों पर साझा किया जा सकता है **1**
● **YouTube** विवरण **(description)** में जोड़ा जा सकता है **1**
● **WhatsApp, Telegram, Instagram, Facebook** आदि पर वितरित किया जा सकता है **1**
● चर्च, कलीसिया, बाइबल अध्ययन और प्रशिक्षण में उपयोग किया जा सकता है **1**
इसके लिए किसी लिखित अनुमति की आवश्यकता नहीं है। **1**
श्रेय (Attribution) 1
जहाँ संभव हो, वहाँ निम्न श्रेय दिया जाए**:** **1**
लेखक**: Rev. Sarvjeet Herbert**
प्रकाशक**: Nayi Srishti –** नई सृष्टि **1**
व्यावसायिक उपयोग 2
यह पुस्तक व्यावसायिक लाभ के लिए नहीं बनाई गई है।
यदि कोई इसे बेचने या व्यावसायिक उपयोग करना चाहता है, तो पहले लेखक/प्रकाशक से संपर्क करे। **2**
प्रथम संस्करण **– 2026** **2**
पवित्र आत्मा और मानवता **2**
एक शिष्यत्व शिक्षण श्रृंखला 2
कॉपीराइट एवं उपयोग अनुमति 2
इस पुस्तक का उद्देश्य 4
इस पुस्तक का उपयोग कैसे करें 5
विषय सूची 6
अध्याय **1** **8**
पवित्र आत्मा कौन है? 8
अध्याय **2** **9**
पवित्र आत्मा मनुष्य के हृदय को क़ायल करता है 9
अध्याय **3** **10**
पवित्र आत्मा नया जन्म देता है 10
अध्याय **4** **11**
पवित्र आत्मा का फल – प्रेम 11
अध्याय **5** **12**
पवित्र आत्मा का फल – यीशु में आनंद 12

अध्याय **6** **13**
पवित्र आत्मा का स्थायी अभिषेक 13
अध्याय **7** **14**
महान आज्ञा के पालन के लिए पवित्र आत्मा का अभिषेक 14
अध्याय **8** **15**
याजकीय अभिषेक – सेवा के लिए बुलाहट 15
अध्याय **9** **16**
राजसी अभिषेक और पवित्र आत्मा का निर्देशन 16
अध्याय **10** **17**
पवित्र आत्मा का वरदान 17
🙏 समापन प्रार्थना 17

अध्याय 1

पवित्र आत्मा कौन है?

पवित्र आत्मा कोई शक्ति, भावना या प्रभाव मात्र नहीं है, बल्कि वह **परमेश्वर का जीवित और व्यक्तित्वयुक्त आत्मा** है। बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर तीन व्यक्तियों में एक है—**पिता, पुत्र (यीशु मसीह), और पवित्र आत्मा**। जैसे पिता और पुत्र व्यक्ति हैं, वैसे ही पवित्र आत्मा भी एक सजीव, सोचने-समझने, बोलने और कार्य करने वाला व्यक्ति है।

अनेक लोग पवित्र आत्मा को केवल चमत्कारों या अलौकिक अनुभवों से जोड़ते हैं, परंतु बाइबल के अनुसार पवित्र आत्मा का कार्य इससे कहीं अधिक गहरा और व्यापक है। पवित्र आत्मा ही वह है जो सृष्टि के आरंभ से कार्यरत रहा है। उत्पत्ति की पुस्तक में लिखा है कि परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मँडराता था। इससे यह स्पष्ट होता है कि पवित्र आत्मा सृष्टि के कार्य में सक्रिय था।

यीशु मसीह के जीवन और सेवकाई में भी पवित्र आत्मा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। यीशु का जन्म पवित्र आत्मा की सामर्थ से हुआ, उनका अभिषेक पवित्र आत्मा द्वारा हुआ, और उनकी सेवकाई आत्मा की सामर्थ में ही आगे बढ़ी। यही पवित्र आत्मा आज भी विश्वासियों के जीवन में कार्य करता है।

पवित्र आत्मा हमें सत्य सिखाता है, हमें मार्गदर्शन देता है, और हमें परमेश्वर की इच्छा को समझने में सहायता करता है। वह केवल बाहरी जीवन को नहीं, बल्कि **भीतरी मनुष्य** को बदलता है। बिना पवित्र आत्मा के, कोई भी व्यक्ति परमेश्वर को सच्चे रूप में नहीं जान सकता।

इसलिए, पवित्र आत्मा को जानना मसीही जीवन की नींव है। जब तक हम यह नहीं समझते कि पवित्र आत्मा कौन है, तब तक हम उसके कार्य को सही रूप में नहीं पहचान सकते।

अध्याय 2

पवित्र आत्मा मनुष्य के हृदय को क़ायल करता है

पवित्र आत्मा का एक मुख्य कार्य यह है कि वह मनुष्य के हृदय को **क़ायल** करता है। यह बात समझना बहुत आवश्यक है कि पवित्र आत्मा कभी दोषी ठहराने (condemnation) का कार्य नहीं करता। दोषी ठहराना हमारे अपने मन या आत्मिक कमजोरी से हो सकता है, परंतु पवित्र आत्मा का कार्य है—हृदय को सत्य के प्रति क़ायल करना।

जब कोई व्यक्ति सुसमाचार सुनता है, तो केवल शब्द ही उसे नहीं बदलते, बल्कि पवित्र आत्मा उन शब्दों को जीवित बनाकर हृदय तक पहुँचाता है। वह मनुष्य को यह एहसास कराता है कि उसे उद्धार की आवश्यकता है, कि वह अपने बल से परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकता।

यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में क़ायल करेगा। इसका अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा मनुष्य के भीतर यह जागृति लाता है कि पाप क्या है, परमेश्वर की धार्मिकता क्या है, और न्याय का सत्य क्या है।

यह क़ायल किया जाना कोई डराने वाला अनुभव नहीं होता, बल्कि यह परमेश्वर की दया का प्रमाण है। पवित्र आत्मा हमें तोड़ता नहीं, बल्कि हमें सत्य की ओर खींचता है। वह हमारे भीतर पश्चाताप उत्पन्न करता है, जिससे हम परमेश्वर की ओर मुड़ सकें।

यदि पवित्र आत्मा कार्य न करे, तो कोई भी व्यक्ति स्वयं से यीशु को प्रभु स्वीकार नहीं कर सकता। इसलिए उद्धार की यात्रा हमेशा पवित्र आत्मा की पहल से आरंभ होती है।

अध्याय 3

पवित्र आत्मा नया जन्म देता है

मसीही विश्वास का केंद्र बिंदु यह सत्य है कि **मसीहत धर्म नहीं, परंतु नया जन्म है**। यह नया जन्म पवित्र आत्मा के द्वारा होता है। यीशु ने निकुदेमुस से कहा कि जब तक कोई मनुष्य आत्मा से नया जन्म न ले, तब तक वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।

नया जन्म बाहरी सुधार नहीं है। यह कोई धार्मिक आदत या परंपरा नहीं है। यह मनुष्य की आत्मा के भीतर होने वाला एक चमत्कारी कार्य है, जिसमें पुराना जीवन समाप्त होता है और नया जीवन आरंभ होता है।

जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास करता है, तब पवित्र आत्मा उसके भीतर आकर निवास करता है और उसकी आत्मा को नया बना देता है। यही वह क्षण होता है जब व्यक्ति परमेश्वर की संतान बनता है।

नया जन्म हमें परमेश्वर से जोड़ता है। इससे पहले हम परमेश्वर से अलग थे, परंतु नया जन्म हमें उसके परिवार का सदस्य बना देता है। यह नया जीवन आत्मा से प्रारंभ होता है और फिर धीरे-धीरे हमारे विचारों, व्यवहार और जीवनशैली में दिखाई देता है।

पवित्र आत्मा ही इस नए जीवन को बनाए रखता है। वह हमें सिखाता है, सुधारता है, और बढ़ाता है। नया जन्म केवल आरंभ है—इसके बाद आत्मिक बढ़ोतरी की यात्रा चलती रहती है।

अध्याय 4

पवित्र आत्मा का फल – प्रेम

पवित्र आत्मा के फलों में सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण फल है—**प्रेम**। प्रेम केवल एक भावना नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर के स्वभाव की अभिव्यक्ति है। बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर प्रेम है, और जब पवित्र आत्मा हमारे भीतर निवास करता है, तो वही प्रेम हमारे जीवन में प्रकट होने लगता है।

यह प्रेम मानवीय प्रेम से अलग है। संसार का प्रेम स्वार्थ पर आधारित होता है, परंतु पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न प्रेम **त्याग, क्षमा और बलिदान** से भरा होता है। यह प्रेम परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि परमेश्वर के सत्य पर स्थिर रहता है।

जब हम उद्धार प्राप्त करते हैं, तब पवित्र आत्मा यीशु का प्रेम हमारे हृदय में उंडेल देता है। यह प्रेम हमें पहले परमेश्वर से जोड़ता है और फिर दूसरों से सही संबंध बनाने में सहायता करता है। इसी प्रेम के द्वारा हम शत्रुओं को क्षमा कर सकते हैं, टूटे हुए लोगों को स्वीकार कर सकते हैं, और बिना शर्त सेवा कर सकते हैं।

पवित्र आत्मा हमें इस प्रेम में बढ़ाता है। यह एक दिन में पूर्ण नहीं होता, बल्कि प्रतिदिन आत्मा के अधीन चलने से यह प्रेम हमारे स्वभाव का भाग बनता जाता है। जब हम आत्मा की अगुवाई में चलते हैं, तब प्रेम केवल शब्दों में नहीं, बल्कि हमारे व्यवहार में दिखाई देता है।

यदि हमारे जीवन में प्रेम नहीं है, तो आत्मिक परिपक्वता अधूरी है। इसलिए पवित्र आत्मा हमें प्रेम में स्थिर रहने और बढ़ने के लिए बुलाता है।

अध्याय 5

पवित्र आत्मा का फल – यीशु में आनंद

पवित्र आत्मा का दूसरा प्रमुख फल है—**आनंद**। यह आनंद संसार की परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाला आनंद नहीं है, बल्कि यह **यीशु में स्थिर और गहरा आनंद** है। यह आनंद उद्धार के साथ हमारे जीवन में प्रवेश करता है।

यह आनंद दुख, कष्ट और संघर्षों के बीच भी बना रहता है, क्योंकि इसका स्रोत बाहरी परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा की उपस्थिति है। जब हम यीशु के साथ संबंध में चलते हैं, तब आत्मा हमें ऐसा आनंद देता है जिसे संसार छीन नहीं सकता।

पवित्र आत्मा हमें स्मरण कराता है कि हमारा उद्धार सुरक्षित है, कि हम परमेश्वर की संतान हैं, और कि हमारा भविष्य उसकी योजना में है। यही सत्य हमारे भीतर स्थायी आनंद उत्पन्न करता है।

आनंद आत्मिक सामर्थ का स्रोत भी है। बाइबल कहती है कि यहोवा का आनंद हमारी शक्ति है। जब हम थक जाते हैं, हतोत्साहित होते हैं, तब पवित्र आत्मा का आनंद हमें फिर से खड़ा करता है।

यह आनंद आत्मा के अधीन जीवन जीने से बढ़ता है। जैसे-जैसे हम आत्मा की आवाज़ सुनते हैं, उसकी अगुवाई में निर्णय लेते हैं, और परमेश्वर की इच्छा में चलते हैं, वैसे-वैसे यह आनंद हमारे जीवन में परिपक्व होता जाता है।

यीशु में आनंद केवल एक अनुभव नहीं, बल्कि एक जीवन शैली है—जो पवित्र आत्मा द्वारा विकसित होती है।

अध्याय 6

पवित्र आत्मा का स्थायी अभिषेक

जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह में उद्धार प्राप्त करता है, तब पवित्र आत्मा केवल बाहर से सहायता नहीं करता, बल्कि **विश्वासी के भीतर निवास करने लगता है**। इसे पवित्र आत्मा का **अंतर्निवास** कहा जाता है। यह निवास ही मसीही जीवन की नींव है।

पवित्र आत्मा का अंतर्निवास हमें यह आश्वासन देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। वह हमारे भीतर सदा रहने के लिए आता है, न कि अस्थायी रूप से। यही कारण है कि मसीही जीवन आत्म-बल से नहीं, बल्कि आत्मा की सामर्थ से जिया जाता है।

अंतर्निवास के साथ-साथ पवित्र आत्मा हमें **अभिषेक** भी देता है। यह अभिषेक हमें पवित्र जीवन जीने, पाप से दूर रहने, और परमेश्वर की इच्छा में चलने की सामर्थ देता है। यह कोई भावनात्मक अनुभव मात्र नहीं, बल्कि एक आत्मिक सच्चाई है।

जब हम आत्मा के अंतर्निवास को समझते हैं, तब हम अपनी शक्ति में संघर्ष करना छोड़ देते हैं। हम सीखते हैं कि आत्मा हमारे भीतर कार्य कर रहा है—हमें सिखाने, मार्गदर्शन करने और बदलने के लिए।

यह अंतर्निवास और अभिषेक हमें यह भी सिखाता है कि परमेश्वर हमारे बहुत निकट है। वह केवल स्वर्ग में नहीं, बल्कि हमारे हृदय में निवास करता है। यही सच्चाई मसीही जीवन को प्रभावी और विजयी बनाती है।

अध्याय 7

महान आज्ञा के पालन के लिए पवित्र आत्मा का अभिषेक

यीशु ने अपने चेलों को एक स्पष्ट आज्ञा दी—**जाओ और सब जातियों को चेला बनाओ**। इस महान आज्ञा को पूरा करना मानवीय सामर्थ से संभव नहीं है। इसलिए पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी को इस कार्य के लिए **अभिषेक और सामर्थ** देता है।

पवित्र आत्मा का यह अभिषेक केवल प्रचारकों या पास्टरों के लिए नहीं है। यह हर उस विश्वासी के लिए है जो यीशु का अनुसरण करता है। आत्मा हमें साहस देता है, सही शब्द देता है, और सही समय पर गवाही देने की बुद्धि देता है।

जब हम पवित्र आत्मा के अभिषेक में चलते हैं, तब हम भय के स्थान पर विश्वास में बोलते हैं। आत्मा हमें लोगों के हृदय समझने में सहायता करता है और सुसमाचार को प्रेम और सच्चाई के साथ प्रस्तुत करना सिखाता है।

महान आज्ञा का पालन केवल मंच से नहीं होता, बल्कि हमारे दैनिक जीवन में—परिवार, कार्यस्थल और समाज में—होता है। पवित्र आत्मा हमें हर स्थान पर यीशु का गवाह बनने के लिए तैयार करता है।

यह अभिषेक हमें यह भी स्मरण कराता है कि कार्य हमारा नहीं, बल्कि परमेश्वर का है। हम केवल आज्ञाकारी उपकरण हैं, और आत्मा स्वयं लोगों के जीवन में परिवर्तन लाता है।

अध्याय 8

याजकीय अभिषेक – सेवा के लिए बुलाहट

यीशु मसीह में उद्धार पाने वाला प्रत्येक विश्वासी केवल परमेश्वर की संतान ही नहीं, बल्कि **एक याजक भी है**। पवित्र आत्मा हमें **याजकीय अभिषेक** देता है, जिसके द्वारा हम परमेश्वर की सेवा, आराधना और मध्यस्थता कर सकें।

याजकीय बुलाहट का अर्थ केवल धार्मिक कार्य करना नहीं है। इसका अर्थ है—परमेश्वर के सामने खड़ा होना और लोगों की ओर से प्रार्थना करना, और लोगों के सामने खड़ा होकर परमेश्वर के प्रेम और सच्चाई को प्रकट करना।

पवित्र आत्मा हमें यह सिखाता है कि याजकीय सेवा मंच तक सीमित नहीं है। यह हमारे घर, हमारे कार्यस्थल और हमारे दैनिक जीवन में प्रकट होती है। जब हम प्रेम, दया और आज्ञाकारिता में चलते हैं, तब हम याजकीय सेवा कर रहे होते हैं।

याजकीय अभिषेक हमें आत्मिक बलिदान चढ़ाने के लिए बुलाता है—स्तुति, धन्यवाद, पवित्र जीवन और आज्ञाकारिता। यह सेवा दिखावे के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए होती है।

जब कोई विश्वासी अपने याजकीय स्थान को पहचानता है, तब वह स्वयं को छोटा नहीं समझता, बल्कि नम्रता के साथ परमेश्वर की बुलाहट में चलता है। पवित्र आत्मा हमें सिखाता है कि सच्ची सेवा प्रेम से उत्पन्न होती है, न कि पद या पहचान से।

अध्याय 9

राजसी अभिषेक और पवित्र आत्मा का निर्देशन

यीशु मसीह में विश्वासी केवल याजक ही नहीं, बल्कि **राजा भी है**। पवित्र आत्मा हमें **राजसी अभिषेक** देता है, जिससे हम जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में परमेश्वर के अधिकार और अनुशासन के साथ चल सकें।

राजसी अभिषेक का अर्थ दूसरों पर प्रभुत्व जमाना नहीं है, बल्कि अपने जीवन पर आत्मिक अधिकार में चलना है। पवित्र आत्मा हमें आत्म-संयम, बुद्धि और सही निर्णय लेने की सामर्थ देता है।

जब हम आत्मा के निर्देशन में चलते हैं, तब हम परिस्थितियों के दास नहीं रहते। आत्मा हमें सिखाता है कि कैसे सत्य, धार्मिकता और शांति के साथ नेतृत्व किया जाए—चाहे वह परिवार हो, कार्यस्थल हो या समाज।

राजसी जीवन आत्म-घमंड से नहीं, बल्कि आत्मा पर निर्भरता से उत्पन्न होता है। पवित्र आत्मा हमें यह सिखाता है कि सच्चा राजा वही है जो पहले स्वयं आज्ञाकारी हो।

जब विश्वासी राजसी अभिषेक को समझता है, तब वह हार की मानसिकता छोड़ देता है और मसीह में दी गई पहचान में स्थिर होकर चलता है। यह जीवन आत्मा के मार्गदर्शन में आगे बढ़ने का जीवन है।

अध्याय 10

पवित्र आत्मा का वरदान

पवित्र आत्मा के साथ विश्वासी के जीवन में दो महत्वपूर्ण आत्मिक अनुभव होते हैं। पहला है—**अनंत जीवन का वरदान**—जिसमें पवित्र आत्मा हमारे नए जन्मे आत्मा में निवास करता है। दूसरा है—**पवित्र आत्मा का वरदान**, जिसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी कहा जाता है।

पहला अनुभव हमें परमेश्वर की संतान बनाता है, और दूसरा अनुभव हमें परमेश्वर की सेवा के लिए सामर्थ देता है। दोनों अनुभव आवश्यक हैं और एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।

पवित्र आत्मा का वरदान हमें आत्मिक सेवा, गवाही, प्रार्थना और परमेश्वर की योजना में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए तैयार करता है। यह वरदान किसी विशेष वर्ग के लिए नहीं, बल्कि हर उस विश्वासी के लिए है जो विश्वास और आज्ञाकारिता में आगे बढ़ना चाहता है।

इस पूरी श्रृंखला में हमने देखा कि पवित्र आत्मा कैसे मानव जीवन में कार्य करता है—दोष नहीं, बल्कि कायल करता है; नया जन्म देता है; चरित्र में फल उत्पन्न करता है; और सेवा के लिए अभिषेक देता है।

🙏 समापन प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तूने हमें पवित्र आत्मा का वरदान दिया। हम स्वीकार करते हैं कि हम अपनी सामर्थ से नहीं, बल्कि तेरी आत्मा की सामर्थ से जीवन जीना चाहते हैं। हमें सिखा कि हम आत्मा के निर्देशन में चलें, फलवन्त जीवन जिएँ और तेरी इच्छा पूरी करें। हम स्वयं को तेरे हाथों में समर्पित करते हैं। यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं।

आमीन।